अथ गंगामन्त्रानुष्ठानविधिः

अथ मन्त्रः :- ''नमः शिवायै प्रथमं नारायण्यै पदं ततः। दशहरायै पदमिति गङ्गायै मन्त्र एष वै।।'' अर्थात् मन्त्र का स्वरूप यह है ''**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै नमो नमः।**'' इस मन्त्र का 22,00,000 जप एक पुरश्चरण होता है। दशांशादि सहित 25,00,000 जपकर (संक्षेप में) हवन कर समाप्त करें।

फलम् - सर्वबाधारहितमोक्षप्राप्तिः।

अथ विनियोगः :- **ॐ अस्य श्री गङ्गामन्त्रस्य जह्नु ऋषिः, जगती छन्दः, गङ्गा देवता, सर्वाभीष्ट - सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।**

अथ ऋष्यादिन्यासः :- **ॐ अस्य श्री गङ्गामन्त्रस्य जह्नुऋषये नमः** - शिरसि, **जगतीछन्दसे नमः** - मुखे, **गङ्गादेवतायै नमः** - हृदये नमः, **सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः** - सर्वाङ्गे।

अथ हृदयादिन्यासः :- **ॐ ॐ नमः** -हृदयाय नमः, **ॐ शिवायै नमः** -शिरसे स्वाहा, **ॐ नारायण्यै नमः** -शिखायै वषट्, **ॐ दशहरायै नमः** -कवचाय हुम्, **ॐ गङ्गायै नमः** -नेत्रत्रयाय वौषट्, **ॐ नमो नमः** - अस्त्राय फट्।

अथ अंगन्यासः :- **ॐ ॐ नमः** - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, **ॐ शिवायै नमः** - तर्जनीभ्यां नमः, **ॐ नारायण्यै नमः** - मध्यमाभ्यां नमः, **ॐ दशहरायै नमः** - अनामिकाभ्यां नमः, **ॐ गङ्गायै नमः** - कनिष्ठि-काभ्यां नमः, **ॐ नमो नमः** - करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ ध्यानम् :- **अहिरिपुपति कान्ता तात सम्बद्ध कान्ता, हरतनयनिहन्त्री प्राणदात्री ध्वजस्य।**
सखिसुतसुतकान्ता तात सम्पूज्य कान्ता, पितु शिरसि वहन्ती जाह्नवी नः पुनातु।।

पंचोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन आदि करके संकल्पानुसार मन्त्र जपें।

।।हरिः ॐ तत्सत्।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't add this stamp.
WWW.PRINT-DRIVER.COM